संख्या-डीआई.टी-एफ(10)-6/2009 – 7780 – 7834
हिमाचल प्रदेश सरकार
सूचना एवं प्रौद्योगिकी।

प्रेषक

निदेशक
सूचना एवं प्रौद्योगिकी,
हिमाचल प्रदेश ।

प्रेषित

समस्त विभागाध्यक्ष,
हिमाचल प्रदेश सरकार ।

दिनांक: शिमला-9 11 **फरवरी 2009**

विषयः **हिन्दी का उपयोग करने बारे।**

महोदय,

उपरोक्त विषय के संदर्भ में मुझे यह कहने का निर्देश हुआ है कि भारतीय लोगों के लिए हिंदी का अत्यधिक महत्व है। देश भर में 50 करोड़ से अधिक हिंदी भाषियों के होते हुए हिंदी वास्तव में प्रशासन और बहुसंख्यकों की भाषा है। हिन्दी का वर्चस्व सर्वविदित है। जैसे अंग्रेजी को लिखने के लिये लैटिन (A,B,C,....) लिपि का उपयोग होता है। भारत की कई भाषाओं को लिखने के लिये नागरी (क़ ख़, ग़,....) लिपि का उपयोग होता है। उसी प्रकार आधुनिकतम मानकों व तकनीकों के अनुसार फांटस निर्मित किये गए है। इन्हीं मानकों व तकनीकों का उपयोग समकालीन Operating Systems (ऑपरेटिंग सिस्टमस) द्वारा किया जाता है। जिनमे युनिकोड एक महत्वपूर्ण आधुनिक मानक व तकनीक है। युनिकोड विश्व की समस्त लिपियों की एकीकृत संकेत प्रणाली/विधि है। युनिकोड के सिवा किसी अन्य संकेत प्रणाली का उपयोग करने से जब दो विभिन्न प्रोग्रामों अथवा कंप्यूटर के बीच डेटा भेजा जाता है, तो उस डेटा के त्रुटिगस्त (खराब) होने का अन्देशा रहता है। युनिकोड के कारण ही Windows पर इंडिक सपोर्ट सक्षम हो पाई है। युनिकोड विश्वव्यापी बाज़ार को अधिक जटिल बनाने के बजाय अपेक्षाकृत सरल ही बनाता है; युनिकोड विश्वव्यापी सॉफ़्टवेयर का भविष्य है, जिसमें इंडिक भाषा बाज़ार के लिए सॉफ़्टवेयर भी शामिल है.।

कंप्यूटर पर माइक्रोसॉफ़्ट ऑफ़िस आधारित कार्य हिंदी में करने के लिए कंप्यूटर में हिन्दी इंडिक आई एम ई स्थापित करना आवश्यक है। इस विभाग से हिन्दी के उपयोग से सम्बन्धित वांछित सूचना सलग्न प्रपत्र पर प्रेषित है। अतः आपसे अनुरोध है कि इस सरल प्रक्रिया द्वारा हिन्दी का अधिकतम प्रयोग किया जाए।

भवदीय

निदेशक
सूचना एवं प्रौद्योगिकी,
हिमाचल प्रदेश ।

युनिकोड:-

युनिकोड में प्रत्येक वर्ण के लिए विशिष्ट संख्या होती है, चाहे उसका कोई भी प्लेटफ़ॉर्म हो, कोई भी प्रोग्राम हो या कोई भी भाषा हो. बुनियादी तौर पर, कंप्यूटरों का संबंध केवल संख्याओं से ही होता है। वे प्रत्येक अक्षर और वर्ण को एक खास संख्या देकर स्टोर कर लेते हैं. युनिकोड के आविष्कार से पहले इन संख्याओं के लिए हज़ारों अलग-अलग एन्कोडिंग प्रणालियाँ थीं. किसी एक एन्कोडिंग में भी पर्याप्त वर्ण नहीं थे: उदाहरण के लिए, अकेले यूरोपियन यूनियन को ही अपनी सभी भाषाओं को समाहित करने के लिए अलग-अलग और भिन्न- भिन्न प्रकार की एन्कोडिंग्स की आवश्यकता थी। अंग्रेज़ी जैसी अकेली भाषा के लिए भी उसके सभी अक्षरों, विराम चिह्नों और सामान्य प्रयोग में आने वाले तकनीकी प्रतीकों के लिए कोई एक एन्कोडिंग पर्याप्त नहीं थी।

ये एन्कोडिंग प्रणालियाँ आपस में भी टकराती थीं अर्थात् इनमें एक ही संख्या दो अलग-अलग वर्णों के लिए इस्तेमाल की जा सकती था या एक ही वर्ण के लिए दो अलग-अलग संख्याएँ इस्तेमाल की जा सकती थीं. किसी भी कंप्यूटर (विशेषकर सर्वर) के लिए यह आवश्यकता होता था कि वह अलग-अलग और भिन्न- भिन्न प्रकार की एन्कोडिंग्स को सपोर्ट करे;लेकिन जब डेटा अलग-अलग और भिन्न- भिन्न प्रकार की एन्कोडिंग्स के बीच से गुज़रता है तो उसके विकृत होने का जोखिम हमेशा बना रहता है।

क्लाइंट-सर्वर या बहुविध अनुप्रयोगों और वेबसाइट में युनिकोड को समाविष्ट करने से लीगेसी करेक्टर सेट के उपयोग की लागत में भारी बचत होने लगी है।

युनिकोड किसी अकेले सॉफ़्टवेयर उत्पाद या अकेली वेबसाइट को बिना दुबारा से इंजीनियरी किए हुए अनेक प्रकार के प्लेटफ़ॉर्मों, भाषाओं और देशों के आर-पार भेजने के लिए सक्षम बनाता है. इसकी सहायता से डेटा भिन्न-भिन्न प्रकार के सिस्टमों के आर-पार बिना उसे विकृत किए हुए भेजा जा सकता है।

कंप्यूटिंग समुदाय में से अधिकांश लोगों ने युनिकोड को बहुप्लेटफ़ॉर्म-अंतर्राष्ट्रीयकरण से संबंधित समस्याओं के लिए आदर्श समाधान बताते हुए उसकी प्रशंसा की है.विश्वभर के अधिकांश सॉफ़्टवेयर विकासकर्ताओं ने अपने सॉफ़्टवेयर को युनिकोड के अनुरूप घोषित कर दिया है.ये हैं: IBM, Microsoft, Oracle, Sybase, Unisys, Apple, Bell Labs, Compaq, GNU/Linux, Sun, SCO, Hewlett Packard, Netscape, Ericsson और Novell.और अधिक अनुप्रयोग भी युनिकोड के अनुरूप घोषित होते जा रहे हैं. विशेषकर इंटरनेट के प्रचार-प्रसार से अब यह आशा की जा सकती है कि युनिकोड इस बहुभाषी विश्व में सर्वमान्य मानक के रूप में स्थापित हो जाएगा।

युनिकोड ASCII की सरलता और एकरूपता पर आधारित है, लेकिन यह ASCII की लेटिन वर्णमाला को ही एन्कोड करने की सीमित क्षमता को पार करके उससे कहीं आगे चला जाता है. युनिकोड मानक, विश्व की लिखित भाषाओं के सभी वर्णों को एन्कोड करने की क्षमता रखता है. इसमें 16-बिट की एन्कोडिंग का उपयोग किया गया है और यह 65,000 से अधिक कोड पॉइंट प्रदान करता है. वर्ण

कोडिंग को सरल और दक्ष बनाने के लिए युनिकोड मानक प्रत्येक वर्ण को 16-बिट का विशिष्ट मान प्रदान करता है और जटिल मोड या इस्केप कोड का उपयोग नहीं करता। 65,000 वर्ण, विश्व की महत्वपूर्ण भाषाओं में प्रयुक्त अधिकांश हज़ारों वर्णों को एन्कोड करने के लिए पर्याप्त हैं।

इंडिक आई एम ई द्वारा हिन्दी में टाइप की सुविधा:-

भारतीय भाषाओं में टाइप करने की सुविधा वाले माइक्रोसॉफ़्ट ऑफ़िस सुइट 2003 के आगमन से उस हर भारतीय भाषा में आप टाइप कर सकते हैं जिसे ऑफ़िस 2003 में समर्थन प्राप्त है। फिलहाल जिन भारतीय भाषाओं में आप ऑफ़िस 2003 में काम कर सकते हैं वे हैं- गुजराती, हिंदी, कन्नड, मलयालम, तमिल और बांग्ला। किसी भी भारतीय लिपि की वर्णमाला के जटिल अक्षरों और चिह्नों को आप ऑफ़िस 2003 में इंडिक आई एम ई या इनपुट मेथड एडिटर (कह लीजिए भाषा संपादक) की मदद से आप टाइप कर सकते हैं। ऑफ़िस के किसी प्रोग्राम में भारतीय भाषाओं, जैसे कि हिंदी, कन्नड, मलयालम, तमिल, गुजराती या बांग्ला में टाइप करना चाहते हैं तो आपको आई एम ई की ज़रूरत होगी। यह आई एम ई या आपके लिए माइक्रोसॉफ़्ट ऑफ़िस की सी डी में या माइक्रोसॉफ़्ट भाषाइंडिया वेबसाइट के Downloads लिंक पर उपलब्ध है।

कंप्यूटर पर माइक्रोसॉफ़्ट ऑफ़िस आधारित कार्य हिंदी में करने के लिए एक सरल, 4 चरणों की प्रक्रिया की आवश्यकता होती है।

1. आई एम ई में कार्य करने की संभावना के लिए कंप्यूटर में हिंदी आई एम ई स्थापित करना आवश्यक है। इसके लिए हम पहले ही बता चुके हैं कि इसे bhashaindia.com के मुख्पृष्ट से डाउनलोड किया जा सकता है।
    - अगर कंप्यूटर पर Windows 2000 स्थापित है और हिंदी के लिए सपोर्ट भी सक्रिय है तो उपभोक्ता कंट्रोल पैनल पर जा कर रीजनल ऑप्शन पर जाएं, यहां पर "सेटिंग फॉर द सिस्टम" में " इंडिक बॉक्स" को सेलेक्ट करें। इसके बाद Windows 2000 की सी डी कंप्यूटर के सी डी रॉम ड्राइव में लगाएं और प्रोग्राम स्थापित करने के लिए निर्देश पूरे करें।
    - अगर कंप्यूटर में Windows XP स्थापित है तो कंट्रोल पैनल पर जा कर "रीजनल एंड लैंगुएजेस" ऑप्शन पर जाएं। यहां आपको तीन विकल्प मिलेंगे; रीजनल ऑप्शन, लैंगुएजेस और एडवांस्ड। यहां पर एक बॉक्स होगा " जटिल लिपियों और बाएं से दाएं भाषाओं के लिए (थाई भाषा समेत) फ़ाइल स्थापित करें। इस बॉक्स को सेलेक्ट करें और फिर "अप्लाई" बटन पर क्लिक करें।
2. हिंदी आई एम ई की "सेट अप" फ़ाइल चलाएं (रन करें) और कंप्यूटर पुनः आरंभ करें।
3. अब अगला कदम होगा कंप्यूटर द्वारा की-बोर्ड ले-आउट पहचानने की व्यवस्था करने का। इसके लिए भाषा में परिवर्तन ज़रूरी होगा।

अगर कंप्यूटर पर Windows 2002 स्थापित है तो कंट्रोल पैनल पर जाएं, फिर "टेक्स्ट सर्विस" खंड में। इसमें "इंस्टाल्ड सर्विस" खंड में एक ऑप्शन होगा HI का। इसमें दिखाई देने वाला की- बोर्ड सेलेक्ट करिए और "add" बटन क्लिक करिए। इसके बाद Input Language खंड में हिंदी का विकल्प चुनिए और

- Keyboard Layout / IME बॉक्स को सेलेक्ट करिए। अब जो विकल्प आपको उपलब्ध नज़र आएं उनमें से इंडिक आई एम ई विकल्प सेलेक्ट कर लीजिए।
- अगर कंप्यूटर में Windows XP स्थापित है तो कंट्रोल पैनल पर जा कर "रीजनल एंड लैंगुएजेस" ऑप्शन बटन पर जाएं। यहां उपलब्ध तीन विकल्पों में से लैंगुएजेस ऑप्शन चुनिए। फिर "Text services and input languages" खंड में "Details..." पर क्लिक करिए। क्लिक करने पर हिंदी को इनपुट भाषा के रूप में चुनिए और की बोर्ड के रूप में ट्रेडीशनल हिंदी को चुनिए। इसके आगे Windows 2000 में स्थापना के कदम वैसे ही रहेंगे और ऑप्शन में इंडिक आई एम ई 1 को चुन लीजिए।

4. प्रोग्राम की इस स्थापना पूरी हो जाए फिर ऑफ़िस का कोई भी कार्यक्रम शुरू करिए, नोटपैड और वर्डपैड सहित। Windows के दाईं ओर, नीचे की तरफ़ आपको विभिन्न कार्यक्रमों के चिह्न दिखाई देंगे; उसी में आपको भाषा संकेतक भी दिखाई देगा। इसे क्लिक करिए और फिर जो छोटा मेन्यू नज़र आएगा उसमें " इंडिक आई एम ई" को सेलेक्ट करिए।

हिंदी आई एम ई के इस्तेमाल में कुछ खास बातें ध्यान् रखने योग्य हैं। भारतीय लिपियों की जटिलता और उनके बारे में चल रहे अनुसंधान देखते हुए हिंदी में टाइपिंग करते समय कुछ बातें याद रखें।

1. अगर आप माइक्रोसॉफ़्ट एक्सेल में टाइप कर रहे हैं तो टाइप किए हुए शब्द स्पेस, एंटर या टैब बटन दबाने से पहले नहीं दिखेंगे।
2. जब शब्दसूची की कस्टमाइज़ विंडो बंद कर दी जाती है तो कंप्यूटर की स्क्रीन पर एक छोटी विंडो खुली रहेगी।
3. हिंदी आई एम ई के इस्तेमाल में कुछ खास बातें ध्यान् रखने योग्य हैं। भारतीय लिपियों की जटिलता और उनके बारे में चल रहे अनुसंधान देखते हुए हिंदी में टाइपिंग करते समय कुछ बातें याद यदि माइक्रोसॉफ़्ट फ्रंट पेज़ या माइक्रोसॉफ़्ट आउटलुक के HTML कंपोज़ ऑप्शन में हिंदी बहुत तेजी से टाइप की जाती है तो प्रोग्राम अचानक बंद हो सकता है। इसलिए मध्यम गति की टाइपिंग अपनाएं।
4. माइक्रोसॉफ़्ट एक्सेल में हिंदी लिपि की टाइपिंग के दौरान बिना कारण प्रोग्राम बंद हो जाने की उच्च संभावना होती है, अतः समय-समय पर अपना कार्य "save" करते रहें।
5. माइक्रोसॉफ़्ट फ्रंट पेज़ या माइक्रोसॉफ़्ट आउटलुक के HTML Mail ऑप्शन में हिंदी लिपि लिखते समय कार्य थोड़ा धीमा हो जाता है।
6. अंग्रेज़ी की- बोर्ड ऑप्शन या स्थापित किए गए किसी भी आई एम ई के बीच अदला-बदली के दौरान यदि आखिरी शब्द के बाद जगह नहीं दी गयी तो वह मिट जाता है।
7. माइक्रोसॉफ़्ट फ्रंट पेज़ या माइक्रोसॉफ़्ट आउटलुक के HTML कंपोज़ ऑप्शन में नई पंक्ति पाने के लिए दो बार "Enter" बटन दबाना ज़रूरी है।
8. यदि कोई शब्द/ अक्षर टाइप करने के बाद बिना कोई जगह दिए हुए (जैसे कि स्पेस, एंटर या टैब दबाए हुए) तीर के निशान वाले बटन दबाए गए तो उसके काम करने के लिए उस बटन को दो बार दबाना होगा। अगर शब्दों के बाद जगह है तो बटन एक बार में काम करेंगे।

उपरोक्त विषय से सम्बन्धित अन्य सूचना हेतु इस विभाग से सम्पर्क करे ।